रामायण कालीन संगीत

डा० अनीता कश्यप
वरिष्ठ प्रवक्ता
राघुनाथ गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

डा० अनीता कश्यप

रामायण कालीन संगीत

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. 2, Article No. 25 pp. 155-162

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

रामायण काल में संगीत का जो विकसित रूप देखने को मिलता है। वह सराहनीय है। इस काल में संगीत ने जनमानस को बहुत अधिक प्रेरित और प्रभावित किया। समाज के सभी वर्गो राजाओं तक में संगीत आदरणीय समझा जाता था। रामायण काल में संगीत का अत्यधिक प्रचार था। वैदिक तथा लौकिक दोनों संगीत प्रणलियों का समान रूप से प्रचलन था। नृत्य कला के अन्तर्गत विविध हाव भावों का प्रयोग होता था तथाा गीत एवं वाघ के साथ इनका संयुक्त प्रयोग अनेक लोकोत्सवों पर तथा उल्लास की अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था।

रामायणकालीन युग में संगीत विघा का पर्याप्त विकास हो चुका था। रामायण काल में से ज्ञात होता है कि संगीत विघा समस्त लोकरूचि का विषय बन गयी थी। तत्कालीन समाज में संगीत एक लोकप्रिय कला के रूप में सम्मानित हो चुका था।

मूल शब्द

1. *रस मय स्थल*
2. *चिरकाल*
3. *अभिजात वर्ग*
4. *सांगीतिक साम्रगी*
5. *दुन्दुभि*
6. *राजस्तुति*

ईसा से लगभग 400 वर्ष पूर्व बाल्मीकि ऋषि ने रामायण नाम के महाकाव्य की रचना की इसे आदि काव्य तथा इसके रचियता को आदि कवि कहा जाता है। रामायण काल में संगीत विषयक समुन्नति तथा प्रसार के सर्वत्र दर्शन होते है। संगीत के कला पक्ष के साथ ही शास्त्र पक्ष का प्रकर्ष उस समय हुआ।

भारतीय परम्परा के अनुसार बाल्मीकि की स्थिति दशरथ और राम के समय की थी। उन्होंने ''रामायण'' की रचना राम के जीवन काल में ही की थी। लव कुश ने राम की राज सभा में जाकर रामायण का गान किया था। परन्तु आज के समालोचकों के अनुसार ''रामायण'' का अन्तिम रूप 600 ईसा पूर्व के बना, जो बुद्ध का समय है। अतएव बौद्ध पूर्वकाल से लेकर ईसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक संगीत विषयक तथ्यों का संकलन इस महाकाव्य के आधार पर निरापद रूप से किया जा सकता है।

म्हाकवि बाल्मीकि ने अपनी कलात्मक प्रतिभा से ऐसे अनूठे महाकाव्य की रचना की जिसके रसमय स्थल जन मानस को आप्लावित करते रहते है। चिरकाल पूर्व घटित घटनाये भी प्रत्यक्ष सी दिखायी देती है।

महर्षि बाल्मीकि वैदिक व लौकिक दोनों ही संगीत के सुपडिंत थे। उन्होंने लव कुश के माध्यम से सम्पूर्ण सांगीतिक प्रतिमा का परिचय दिया है। रामायणकालीन संगीत का विवेचन न केवल तत्कालीन सांस्कृतिक उन्नति का बोधक है। अपितु संगीत संबंधी तत्वों के उद्घाटन के लिये भी परम उपादेय है।

समाजिक क्षेत्र में संगीत

रामायण में उल्लिखित सांगीतिक सामग्री से यह विदित होता है कि तत्कालीन सामाजिक एवं साहित्यिक जीवन संगीत[1]मय हो चुका था। इस समय संगीत का सौन्दर्य पौराणिक काल से भी अधिक निखर कर आया।

संगीत प्रत्येक के जीवन का अभिन्न अंग था। चाहे वह राजा हो या प्रजा, नारी हो या नर, राक्षस देवता सभी संगीत प्रेमी थे।

रामचन्द्र के जन्म तथा विवाह पर देवदुन्दुभियां बजने लगी तथा गन्धर्व एवं अप्सराओं का क्रमशः गान तथा नृत्य होने लगा ऐसा उल्लेख रामायण में है।

संगीत का समाज के अभिजात वर्ग में उतना प्रचार नहीं था। जितना कि जन साधारण में था। वैदिक काल की भांति इस काल में भी प्रातःकालीन ईश्वर अराधना में संगीत का समावेश होता था। रामायण काल में संगीत विषयक जो साम्रगी उपलब्ध होती है। उससे यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन सामाजिक एवम् साहित्यक जीवन संगीतमय हो चुका था। प्रत्येक वर्ग संगीत का ज्ञान रखता था।

रामायण काल में संगीत निम्न, मध्यम व उच्च तीनों वर्गो में प्रचलित था। रामराज्य में संगीत का खूब प्रचार प्रसार था। इस काल में प्रत्येक परिवार में संगीत अपने किसी न किसी

रूप में अवश्य विद्यमान था। चाहे वो प्रातकालीन ईश्वरीय अराधना हो या मनोरंजन। बाल्मीकि रामायण में ऐसे अनेक स्थल देखने को मिलते है। जिनमें रामचन्द्र जी का स्वागत जनसमाज द्वारा किया गया है। ''रामचन्द्र के बनवास से लौटने पर वादित्रकुशल व्यक्तियों ने शंख और दुन्दुभियों से उनका स्वागत किया था। रामचन्द्र जी स्वयं संगीत के प्रेमी थे। इस प्रकार संगीत तीनों वर्गो में दिखायी देता है।

संगीत साधना पर इस काल में विशेष बल दिया गया। इसी कारण शास्त्रीय संगीत का काफी प्रचलन था। संगीत के कला पक्ष के साथ साथ शास्त्र पक्ष की भी इस काल में उन्नति हुई। ''रामायण काल में संगीत की खूबी यह थी कि उसमें गहराई अधिक आ चुकी थी। शास्त्रीय संगीत काफी विस्तृत हो चुका था।''

महिलाये संगीत में पूर्ण रूचि रखती थी। रामचन्द्र जी के विवाहोत्सव पर संगीत का आयोजन हुआ था तथा इन अवसरों पर महिलाओं ने मंगलमय गीत गाये तथा नारियाँ आनन्द विभोर होकर नष्त्य करने लगी।

इस काल में स्वयंवर की प्रथा थी इसके अन्तर्गतत वर वधु का चुनाव किया जाता था। इस अवसर पर संगीत का आयोजन[2] किया जाता था। सार्वजनिक रूप से भी समाज में संगीत के आयोजन हुआ करते थे। इन आयोजनों में सर्वसाधारण भी रूचि रखता था।

रामायण काल में संगीत और चरित्र की मर्यादा इनका अटूट सम्बन्ध देखने को मिलता है। संगीत आयोजन पवित्र वातावरण में किया जाता था। संगीत चरित्र की मर्यादा का रक्षक माना जाता था। भक्षक नही। इस काल के संगीत में कही भी अश्लीलता के दर्शन नही होते। जहाँ तक संगीतज्ञो की प्रतिष्ठा का प्रश्न है तो वह वैदिकाल के समान ही बनी रही। समाज में संगीतज्ञों को पूर्ण आदर व सम्मान से देखा जाता था।

नृत्य कला का इस युग में समाज में प्रचार प्रसार था। नृत्य विशेषकर स्त्रियों के द्वारा ही किया जाता था स्त्रियों की नृत्य में रूचि थी। इस युग में लास्य नृत्य भी प्रचलन में था। इस नृत्य का प्रदर्शन गीत वाघ के साथ प्रायः स्त्रियों के द्वारा किया जाता था। इस प्रकार स्त्रियों का नृत्य पर विशेष अधिकार था। अयोध्यापुरी का वर्णन करते समय कहा गया है कि उस पुरी में बहुत सी नाटक मण्डलियाँ थी जिसमें केवल स्त्रियाँ ही नृत्य एवम् अभिनय करती थी।

रामायण काल में नाट्य कला भी विद्यमान थी। जिसका उल्लेख अनेक स्थानों पर रामायण में देखने को मिलता है। शैलूष, नट, नर्तक आदि का उल्लेख स्थान स्थान पर अनेक प्रसंगों पर किया गया है। नट नर्तकों के समाजों में इन कलाओं का सामूहिक प्रदर्शन किया जाता है। उनको इस प्रदर्शन की तैयारी के लिये अवकाश दिया जाता था। नाट्य में जहाँ अभिनय की प्रधानता थी। वहाँ उसको प्रभावशाली बनाने के लिये संगीत और वाघों का समान रूप से महत्व था। संगीत नाटकों के अतिरिक्त पुराण तथा कथावचन की परिपाटी भी प्रचलित थी। नट तथा नटी

दोनों के समुदाय विद्यमान थे जो पुरातन कथाओं को अभिनय के साथ प्रस्तुत करते थे। अयोध्या नगरी में स्त्रियों के स्वतंत्र नाट्य संघ होने की बात निम्न पंक्ति में स्पष्ट होती है–

वधू नाटक संघैश्च सयुक्तां सर्वतः पुरीम्।

रामायण काल और राजनीतिक क्षेत्र में संगीत

प्रत्येक युग के आदर्शो एवम् चिन्तन में परिवर्तन होता रहता है। कवि अपने सम सामायिक युग के आदर्श और विचार धारा से निरपेक्ष और तटस्थ नही रह सकता। चाहे कथानक जिस युग से सम्बन्धित क्यों न हो। उस पर तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता ही है।

रामायण काल में राजनैतिक क्षेत्र में संगीत पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होता है। इस समय राजा भी संगीत प्रेमी थे। राज[3]पुरूषों के जीवन में संगीत का प्रयोग सुख और दुख दोनों प्रसंगों पर किया जाता था। ''बाल्मीकि आश्रय में पहुँचने पर शत्रुघन के स्वागत के लिये तन्त्रीलय समायुक्त रामायण का गान आयोजित किया गया था।

मनोरंजन के क्षेत्र में भी राजाओं ने संगीत को अपनाया ''दुःस्वपनों में व्यय भारत का गान, वादन, नष्त्य नाटक आदि से मनोरंजन करने का प्रयत्न किया जाता था।''

इस समय संगीतज्ञों को राजाश्रय भी प्राप्त था। यह तथ्य रामायण की निम्न उक्ति से स्पष्ट हुआ।

नाराजके जनपद प्रभूतनट नर्तकाः।

रामायणकाल में यह विचार विद्यमान था कि बिना राजाश्रय के संगीत का विकास सम्भव नहीं। अतः राजाश्रय को आवश्यक माना गया है। जिस समय राजा दशरथ की मृत्यु हुई थी। उस समय वशिष्ट और अन्य मन्त्रीयों के बीच उत्तराधिकारी से संबंधित वार्तालाप पर विचार विमर्श व परामर्श चल रहा था। तब वशिष्ट ने कहा था कि बिना राजा के राज्य में जहाँ दूसरी अनेक हानियाँ हुई है वहाँ नृत्य कला और ललित कलाओं का हषस भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इससे विदित है कि ललित कलायें रामायण काल में पूर्ण रूप से राजाओं के संरक्षण में विकसित हो रही थी।

संगीत व्यवसाय से संबंधित अनेक जातियों को राज्य की ओर से संरक्षण प्राप्त होता था। नृत्य कला व्यवसाय के रूप में समाज में कुछ विशेष जातियों द्वारा अपनायी गयी जो कि नट, नर्तक शैलूष जातियाँ कहलायी जाती थी इनको राज्य की ओर से संरक्षण प्राप्त होता था। दूसरे राज्यों के कलाकारों को भी राज्य की ओर से अपनी कला का प्रदर्शन करने हेतू आमन्त्रित किया जाता था। विशेषकर यज्ञ इत्यादि के अवसरों पर तथा संगीत कार्यक्रमों से ओत प्रोत समाजों में। इन समाजों के अन्तर्गत किसी विशिष्ट व्यक्ति को आमन्त्रित किया जाता था। उसके सम्मुख इन बाहर से बुलाये गये कलाकारों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता था। इन कलाकारों को उनकी योग्यता के अनुसार पारितोषिक भी प्रदान किये जाते थे।

अतिथि कलाकारों के स्वागत में अनेक प्रकार की कला गोष्ठियों का आयोजन भी किया जाता था। इस प्रकार की कला गोष्ठियों का आयोजन संगीत मर्मज्ञों की उपस्थिति में किया जाता था। ''श्री रामचन्द्र जी के समक्ष कुश तथा लव के संगीत का प्रदर्शन किया गया था तथा गान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इन[4]

गान गोष्ठी में जिनको आमन्त्रित किया गया था। उनके स्वर, लक्षणज्ञ गान्धर्व लक्षणज्ञ काला मात्रा विशेषज्ञ शब्द विद तथा गीत नृत्य विशारद व्यक्तियों का अर्न्तभाव था।''

स्वागत और विदाई जैसे अवसरों पर संगीत का आयोजन किया जाता था। राजपरिवारों में सदस्यों तथा विशेष व्यक्तियों के स्वागत के समय विभिन्न वाघों को बजाया जाता था। स्वागत तथा विदाई जैसे समारोहों में संगीत का आवश्यक स्थान था। ''राजपरिवारों के सदस्यों तथा अतिथि विशेषों का स्वागत शंख दुन्दुभि के घोष तथा मागध आदि के स्तुति गान से किया जाता था।''

लंका राजा रावण संगीत प्रेमी था उसके राजमहल में नष्त्य इत्यादि की व्यवस्था थी। रावण की राजसभा में अनेक नृर्तकिया थी। ऐसा कहा जाता है कि सस्वर वेद पाठ की पद्धति का प्रचलन सर्वप्रथम उसी ने किया। रावण की दास दासियाँ भी संगीत प्रिय थी उसके दरबार में नाच गाने के आयोजन भी हुआ करते थे। रावण इन आयोजनों में पूर्ण आनन्द लेता था। रावण की एक प्रथक संगीतशाला थी जो विभिन्न प्रकार के वाघ यंत्रों से सुसज्जित थी। रावण का सम्पूर्ण राजमहल विभिन्न प्रकार के वाघों से गुजायमान रहता था। विशेष अवसरों पर विशेष वाघ का वादन किया जाता था। इस प्रकार रावण के राजमहल में पूर्ण रूप से सांगीतिक वातावरण रहता था।

रामायण का विषय क्षेत्र ही धार्मिक है। अतः उसमें धार्मिकला आना स्वाभाविक ही है। रामायण की रचना संगीत के माध्यम से ही हुई थी। अतः रामायण काव्य धर्म व संगीत का मजुंल समन्वय प्रतीत होता है।

इस काल के संगीत को दो भागों में विभाजितत किया जा सकता है। प्रथम गान्धर्व अथवा मार्गी संगीत द्वितीय गान अथवा देसी संगीत। मार्गी संगीत का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति था। धार्मिक स्थानों पर प्रयुक्त होने वाला व्यक्ति संगीत गान्धर्व अथवा मार्गी संगीत कहलाया।

प्रत्येक परिवार में वैदिक काल की तरह धर्म की निर्मल धारा प्रवाहित हो रही थी। प्रत्येक घर में प्रातकाल होते ही ईश्वर की स्तुति संगीतमय हुआ करती थी और इस संगीतमय वातावरण में परिवार का प्रत्येक सदस्य शामिल होता था।

जब रावण का वध करके भगवान राम अयोध्या नगरी लौटते है तो वहाँ भरत ने शुत्रघन को हर्ष पूर्वक आज्ञा दी थी कि नगर के सभी देव स्थानों को सुगन्धित पुष्पों द्वारा गाजे बाजे के साथ पूजन करें। साथ ही नगर के समस्त वैतालिक भाट बाजे बजाने वाले सब कुशल लोग, सभी गणिकायें, राज रानियाँ मंत्रीगण इत्यादि रामचन्द्र जी का मुख दर्शन करने के लिये नगर के बाहर चले।

रामायण काल में यज्ञ इत्यादि वैदिककाल के समान ही हुआ करते थे। यज्ञ समारोहों कई दिनों तक चला करते थे। इन यज्ञों में संगीत आयोजन भी किया जाता था। यज्ञ समारोहों में नट नर्तक भी भाग लिया करते थे। जब यज्ञ याग का कार्यक्रम समाप्त हो जाता था। तब यह नट नर्तक मण्डली के सम्मुख अपनी कला का प्रदर्शन किया करते थे।

रामायण काल में नृत्य का प्रयोग धार्मिक कार्यो में भी होता था। ईश्वर की अराधना भी गीत और नृत्य अर्थात संगीत के द्वारा की जाती थी।

सामान्य जन जहाँ ईश्वर की अराधना में गीत तथा नृत्य का प्रयोग किया करते थे। वहाँ राजा लोग भी देवताओं की अराधना गीत नृत्य के साथ किया करते थे। शिव की अर्चना करने के पश्चात् रावण ने गान तथा नृत्य किया था।

समर्चयित्वा स निशाचरो गगौ प्रसार्य
हस्तान्प्रणनर्त चाग्रतः ।।

राम के अयोध्या लौटने का समाचार प्राप्त होते ही भरतत ने आदेश दिया था कि शुचिव्रत पुरूष संगीत के साथ देवताओं का यथाविधि अर्चन करें।

रामायण काल में धार्मिक क्षेत्र में संगीत सभी वर्गो में दृष्टिगोचर होता है। जहाँ नित्य दैनिक कर्म में ईश्वरीय आराधना में संगीत प्रयुक्त होता था। वहाँ यज्ञ इत्यादि भी संगीत से प्रथक नही थे। राजा लोग भी देवताओं की आराधना संगीत युक्त किया करते थे। नृत्य भी ध ार्मिक क्षेत्र में प्रयुक्त होता था।

रामायण और सांस्कृतिक क्षेत्र में संगीत

रामायण भारत का ऐसा महाकाव्य है जो भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यह ऐसी प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा की धारा प्रवाह गति है, जो आधुनिक युग तक ज°नमानस को प्रभावित करती आयी है। ''यह निश्चित है कि परम्परा प्रिय भारत में पुरातन सांस्कृतिक परम्परा को अन्तनिर्हित करने का श्रेय महाभारत के अतिरिक्त इसी ग्रन्थ को है। विद्वानों के अनुसार मानव जीवन का ऐसा कोई पक्ष नही, जिसकी झांकी रामायण में न मिलती हो अथवा ऐसा कोई सिद्धान्त नही जिसका आभास उसमें प्राप्त न होता हो।''

रामायण काल में सांस्कृतिक क्षेत्र में भी संगीत की महत्ता कम नहीं है। रामायण के बालकाण्ड में उल्लेख आया है। ''गायन्ता नृत्यमाना श्रुवाद यन्तारत्तुराघव। आपोदम् परयम् यन्मूर्व राघणाभूषिता'' यहाँ नृत्य गीत वाघ का उल्लेख हुआ है अर्थात् नृत्य गीत वाघ का मजुंल सामंज्सय ही संगीत है। संगीत के तीन अंग है। नृत्य गीत और वाघ इनको तौर्यत्रिक भी कहते है। नृत्य ही अपने आप में पूर्ण नहीं था। उसके साथ गायन और वादन भी अनिवार्य था।

रामायणकालीन संगीत में श्रंगारिकता के दर्शन भी होते है। असुरो में सुरापान करने के पश्चात् संगीत प्रयोग देखने को मिलता है। इस संबंध में सुन्दर काण्ड में भी उल्लेख आया है। ''श्रगांर की अभिवृद्धि के हेतु संगीत के साथ सुरा का भी प्रयोग किया जाता था। ''लंका के

रावण के अन्तःपुर में हनुमान ने वाघ वादन संसक्त रमणियों को देखा था। बाल्मीकि रामायण में सम्पूर्ण सांगीतिक उपादानों का समावेश है।

रामायण कालीन संगीत में लय तथा ताल को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। ''महर्षि भारद्वाज ने भरत और उनकी सेवा के स्वागत में जो संगीत समारोह किया था उसमें ''शम्प'' या ताल देने के लिये एक अलग दल नियुक्त था''।

रामायण के अन्तर्गत ''प्रमाण'' शब्द का उल्लेख भी हुआ है। जिसका अभिप्राय लय से है जो तीन मानी गयी है–

द्रुत, मध्य तथा विलम्बित

''प्रमाणवि द्रुत मध्य विलम्वितानि'' ।

रामायणकालीन काव्य मानव में इस रसाभिवक्ति काव्य का प्रमुख ध्येय माना जाता था। यह तथ्य उक्ति से स्पष्ट है–

रसै श्रगार करूण हास रौ°द्र मयानकैः।
वीरादिभि रसैर्युक्त काव्यभेत नायताभ्।।

रामायणकालीन [7]

वाघ भारत के सांस्कषतिक धरोधर है। वाघों के अन्तर्गत समस्त प्रकार के वाघों का उल्लेख मिलता है। यन्त्र वाघों में विपंची किन्नरी बल्लकी आदि वीणाओं का वर्णन मिलता है।

सुन्दरकाण्ड में विपंची किषिकन्धा काण्ड में किन्नरी वीणा का उल्लेख है।

महामुनि बाल्मीकि संगीत विद्या में पारगंत थे। ''रामायण की कथा को उन्होंने सर्वप्रथम लवकुश द्वारा ''तंत्री'' वीणा वाद्य के साथ गायन कराया था। उन्हीं के द्वारा रामायण की कथा सर्वप्रथम लोक गोजर हुई।

संगीत सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका था। चाहे व सामाजिक क्षेत्र हो या धार्मिक। राजनैतिक हो या सांस्कषतिक। कोई भी क्षेत्र संगीत से अहूता नही रहा था।

इस समय के संगीत का समाज में प्रतिष्ठित स्थान था जो संगीत पौराणिक काल में विभक्त होने लगा था। अब सम्पूर्ण समाज में उसका विकसित दायरा बन गया। इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस समय तक संगीत जीवन में रच बस गया था।

धार्मिक उत्सवों, यज्ञों में आजीविका में तथा मनोरंजन में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान था। युद्ध के अवसर पर तथा राज्य के उत्सव आदि में भी संगीत अभिन्न अंग था। समाज में गण्किाओं का एक वर्ग बन गया था जो संगीत के माध्यम से अपनी जीविका चलाती थी। भावाभिव्यक्ति का साधन तो संगीत था ही।

सदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय संगीत का इतिहास, पराजये पृ0 136

2. दृढ़ ''रामायण कालीन संस्कषति व्यास'' पृ0 2
3. चिरनिर्वृतय प्येतन्प्रत्यक्षमिव दर्शितम् बा0 काण्ड 4–18
4. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृ0 105
5. श्रीमद बाल्मीकि रामायण – गीता प्रेस गोरखपुर, सवंत् 2017 पृ0 28
6. अयो0 2, 1, 7
7. अयो0 1, 5, 12
8. उत्तर0 93, 15, 94, 3
9. अयो0 75, 4
10. अयो0 73, 14
11. उत्तर 94, 4–9
12. बाल0 11, 26
13. श्रीमद बाल्मीकि रामायण – गीता प्रेस गोरखपुर सव्रत 2017 पृ0 908
14. उत्तर 0 31, 44
15. युद्ध 6, 127, 2
16. सुन्दर काण्ड 10, 30–41
17. नृत्यवादित्रं गीतानि संगीतकमिम होच्यते। नागानन्द नाटक पृ0 9।
18. तौर्यत्रिकं नृत्यवागीत वाधम्। अमरकोष पंक्ति 382
19. सुन्दर 10, 32 तथा 36–49
20. रामायण कालीन संस्कृति डा0 शान्ति कुमार नाथूराम व्यास 1958 पृ0 201–202
21. नाट्य शास्त्र 12, 16
22. बाल0 49
23. भारतीय संस्कृति और कला – वाचस्पति गैरोला 1973 पृ0 218